हिन्दी　　Class - 10th　　1.

गोधूलि (गद्य खण्ड)

1. श्रम विभाजन और जाति प्रथा :-

1. श्रम विभाजन और जाति प्रथा के लेखक कौन हैं।
→ बाबा साहब भीमराव अम्बेदकर ।

2. लेखक की दृष्टि में विडंबना की बात क्या है?
→ जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं ।

3. लेखक की दृष्टि में आदर्श समाज कैसा होना चाहिए,
→ जिसमें स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व का भाव हो,

4. लेखक बेरोजगारी का प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण किसे मानते हैं।
→ जाति प्रथा को ।

5. अम्बेदकर की दृष्टि में भाईचारे का वास्तविक रूप कैसा होता है।
→ दूध और पानी के मिश्रण की तरह ।

6. भारतीय संविधान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका किसकी है?
→ भीमराव अम्बेदकर ।

7. सभ्य समाज की आवश्यकता क्या है?
→ श्रम - विभाजन ।

8. डॉ० भीमराव अम्बेदकर की रचना क्या है?
→ (i) द कास्ट्स इन इंडिया (ii) हू आर शूद्राज (iii) द अनटचेबल्स, हू आर दे ।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

9. आधुनिक सभ्य समाज श्रम-विभाजन को अपरिहार्य क्यों मानता है?
→ कार्य कुशलता के लिए।

10. श्रम विभाजन और जाति प्रथा पाठ बाबा साहेब के किस भाषण का संपादित अंश है?
→ एनीहिलेशन ऑफ कास्ट।

11. प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद अम्बेडकर उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने लिए कहा गए थे?
→ न्यूयार्क।

12. अम्बेडकर के चिंतन व रचनात्मकता के लिए प्रेरक व्यक्ति कौन-कौन थे?
→ बुद्ध, कबीर, ज्योतिबा फुले।

13. जाति-पांति तोड़क मंडल भाषण लाहौर में कब हुआ था?
→ 1936 ई. में।

14. श्रम विभाजन और जाति प्रथा क्या है?
→ निबंध।

15. अम्बेडकर के भाषण 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट' को किसने हिन्दी में रूपान्तर किया था?
→ तुलसी सिंह यादव।

16. अम्बेडकर जन्म किस परिवार में हुआ था?
→ दलित।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

17. लेखक के इस युग में कहाँ पर विडम्बना दिखाई देता था?
→ जातिवाद में।

18. अम्बेदकर के माता का क्या नाम था?
→ भीमा बाई।

19. अम्बेदकर ने पी. एच. डी. की उपाधि कब धारण की?
→ 1916

20. आर्थिक पहलू से भी जाति प्रथा क्या है?
→ हानिकारक।

21. पेशे का दोषपूर्ण निर्धारण कौन करती है?
→ जाति - प्रथा।

22. भारत में बेरोजगारी का प्रमुख कारण क्या है?
→ जाति - प्रथा।

23. 'मूक नायक' क्या है?
→ पत्रिका।

24. अम्बेदकर की मृत्यु कब और कहा हुई?
→ 1956, दिल्ली में।

25. अम्बेदकर का जन्म कब हुआ था?
→ 14 अप्रैल 1891।

26. अम्बेदकर का जन्म कहा हुआ था?
→ महू मध्यप्रदेश में।

27. अम्बेदकर ने किस पत्रिका का सम्पादन किया था।
→ बहिष्कृत भारत।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

२८. भारतीय संविधान का निर्माण किसने किया
→ डॉ० भीमराव अम्बेडकर।

२९. अम्बेडकर का वाङ्मय हिन्दी के कितने खण्डों में प्रकाशित हो चुकी है।
→ २१ खण्डों में।

३०. आधुनिक समाज सभ्य समाज कार्यकुशलता के लिए किसे आवश्यक है?
→ श्रम विभाजन।

३१. अम्बेडकर के पिता का क्या नाम था?
→ रामजी सकपाल।

५. लेखक किस विडंबना की बात करता है? विडंबना का स्वरूप क्या है?

=> लेखक उस विडंबना की बात करता है जिस कारण आज के जागृत समाज में जातिवादी विचार फल-फूल रहा है। लेखक का कहना है कि इस युग में भी कुछ लोग जातिवाद के समर्थक और पोषक बने हुए हैं, जब कि विश्व के किसी समाज में जातिवाद आधारित श्रम विभाजन नहीं है। लेकिन जातिवाद के पोषक लोग कार्यकुशलता के लिए

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

इसे आवश्यक मानते हैं। विडंबना का मुख्य कारण यही है, क्योंकि इससे नीच-ऊँच की भावना बलवती होती है और मनुष्य को जन्म से ही किसी काम-धंधे में लाँघ देती है। फलतः उसकी रुचि एवं क्षमता का हनन होता है।

2. जातिपाद के पोषक उसके पक्ष में क्या तर्क देते हैं?

=> जातिवाद के पोषकों का कहना है कि कर्म के अनुसार जाति का विभाजन हुआ था। इस विभाजन में लोगों में पैतृगत व्यवसाय में निपुणता आती है अर्थात् कार्यकुशलता में वृद्धि होती है। आधुनिक सभ्य समाज कार्य-कुशलता के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानते हैं, जबकि जाति-प्रथा भी श्रमविभाजन का ही एक रूप है।

3. जातिपाद के पक्ष में दिए गए तर्कों पर लेखक की प्रमुख आपत्तियाँ क्या हैं?

=> जातिवाद के पक्ष में दिए गए तर्कों पर लेखक का कहना है कि जाति प्रथा श्रम-विभाजन का स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह श्रम

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

विभाजन के साथ - साथ श्रमिकों का भी विभाजन करती है। यह मनुष्य को जन्म के साथ ही किसी - न - किसी से बांध देती है। इस कारण मनुष्य अपनी रुची और क्षमता के अनुसार काम का चुनाव नहीं कर पाता है।

4. जाति भारतीय समाज में श्रम विभाजन का स्वाभाविक रूप क्यों नहीं कही जा सकती है?

=> लेखक के अनुसार जाति भारतीय समाज में श्रम विभाजन का स्वाभाविक रूप नहीं क्योंकि यह मनुष्य की रुची पर अधारित है। इसमें व्यक्ति की उपेक्षा होती है। व्यक्ति अपनी रुची अथवा क्षमता के अनुसार अपना पेशा तथा कार्य का चुनाव नहीं कर सकता यह व्यवस्था केवल माता - पिता के सामाजिक स्तर का ही ध्यान रखती है, जिस कारण व्यक्ति जीवनभर के लिए किसी निश्चित व्यवसाय से बंध जाता है। फलतः काम की कमी जैसे संकट के समय उसे भूखों मरने के लिए विवश होना पड़ता है।

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

5. जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण कैसे बनी हुई है?

=> जाति प्रथा मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बांध देती है। उसे कोई अन्य पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती, भले ही, वह उस पेशे में पारंगत क्यों न हो आधुनिक युग में उद्योग - धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास कभी कभी पेशा में भी अकस्मात हो जाता है।

8. सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए लेखक ने किन विशेषताओं को आवश्यक माना है?

=> सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए लेखक का ने समाज में स्वतंत्रता समानता तथा भाईचारे की भावना का होना आवश्यक माना है। लेखक का मानना है कि ऐसे ही समाज में सबके कल्याण एवं सहयोग की भावना होती है। समाज के बहुविध हितों में सबका समान भाग होता है। सभी एक दूसरे की रक्षा के प्रति सजग रहते है। ऐसे समाज में इतनी गतिशीलता होती है कि कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक संचालित होते रहते है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

2. विष के दाँत (नलिन विलोचन शर्मा)

1. नलिन विलोचन शर्मा पटना विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष कब बने?
→ 1959 में।

2. आलोचकों के अनुसार प्रयोगवाद का वास्तविक प्रारंभ किसकी कविताओं से हुआ?
→ नलिन विलोचन के कविता से।

3. नलिन विलोचन शर्मा के कहानियों में किसके तत्व समयता से उभरकर आए: -
→ मनोवैज्ञानिकता का।

4. विष के दाँत कहानी किस वर्ग के अंतर्विरोधों को उजागर करती है?
→ मध्यम वर्ग।

5. खोखा - खोखी किस भाषा का शब्द है?
→ बंगला का।

6. सेन साहब की कितनी लड़कियाँ थी?
→ पाँच।

7. शोफर शब्द का अर्थ है?
→ ड्राइवर।

8. ऐसे ही लड़के अगे चलकर गुंडे, चोर, डाकू बनते हैं। यह कथन किसका है?
→ सेन साहब का।

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

9. नलिन विलोचन शर्मा की मृत्यु कब हुई थी ?
→ 12 Sep 1961

10. मदन अक्सर किसके हाथों से पिटता ?
→ पिता

11. विष के दाँत का लेखक कौन है ?
→ नलिन विलोचन शर्मा।

12. गिरधरलाल कौन है ?
→ मदन का पिता।

13. खोखा का क्या नाम था।
→ काशू।

14. सेन साहब अपने पुत्र को बनाना चाहते थे ?
→ बिजनेसमैन या इंजीनियर।

15. मदन की उम्र क्या थी ?
→ पाँच - छह साल।

16. काशू मदन के साथ किस खेल में शरीक होना चाहता था ?
→ लट्टू के खेल में।

17. मदन ने काशू के कितने दाँत तोड़ दिए
→ दो।

18. गिरधरलाल किसकी फैक्टरी में काम करता ?
→ सेन साहब की फैक्टरी में।

19. सेन साहब जिसके व्यंग्य से संस्कार रह गए?
→ पत्रकार महोदय के व्यंग्य से ।

20. मक्खन जिसका पुत्र था ?
→ गिरधर का ।

21. खाखा - खाखी का अर्थ है?
→ चाचा - चाची ।

22. विष के दाँत कैसी कहानी है?
→ मनोवैज्ञानिक

23 नलिन विलोचन शर्मा का जन्म कब हुआ ?
→ 18 Feb 1918 ।

24. नलिन विलोचन शर्मा का जन्म कहा हुआ ?
→ बदरघाट , पटना ।

25. नलिन विलोचन शर्मा के पिता का क्या नाम था?
→ पंडित रामवतार शर्मा ।

26. नलिन विलोचन शर्मा के माता का क्या नाम था?
→ रत्नावती शर्मा ।

27. दृष्टिकोण किनकी रचना है?
→ नलिन विलोचन शर्मा की ।

28. लड़कियाँ क्या है? कठपुतलियाँ है, किसे इस बात पर गर्व है?
→ माता - पिता को ।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

29. मेगरकार को किससे खतरा हो सकता है या था ?
→ खोखा से ।

30. सेन साहब ने किसे खूब फटकार लगाई ?
→ गिरधरलाल को ।

31. कौओं की जमात में शामिल होने के लिए कौन ललक गया था ?
→ हंस ।

32. किसके अनुसार सेनों ने सिद्धांतो को बदल लिया था ?
→ खोखा के अनुसार ।

7. कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

⇒ कहानी कला की दृष्टि से प्रस्तुत कहानी 'विष के दाँत' का शीर्षक सार्थक है, क्योंकि इस कहानी का उद्देश्य मध्यवर्गीय अन्तर्विरोधों को उजागर करना है जहाँ एक ओर सेन साहब जैसे महत्वाकांक्षी तथा सफेदपोश अपने भीतर लिंग भेद जैसे कुसंस्कार छिपाए हुए है, वही दूसरी ओर गिरधर जैसी नौकरी-पेशा अनेक तरह की थोपी गई बंदिशों के बीच भी अपने अस्तित्व

की बहादुरी एवं साहस के साथ बचाए रखने के लिए संघर्षरत है।

6. सेन साहब और उनके मित्रों के बीच क्या बातचीत हुई और पत्रकार मित्र ने उन्हें किस तरह उत्तर दिया।

=> सेन साहब और उनके मित्रों के बीच बातचीत हुई कि वह अपने पुत्र को अपने ढंग से ट्रेड करने, क्योंकि वह उसको अपनी तरह बिजनेस मैन या इंजीनियर बनाना चाहते हैं। वहाँ बैठे पत्रकार महोदय से जब उनके वक्तव्य के विषय में उनका ख्याल पूछा गया, तब उन्होंने उत्तर दिया कि उनका पुत्र जेंटिलमैन जरूर बने और जो कुछ बने या न बने, उसका काम है, उसे पूरी आजादी रहेगी। पत्रकार महोदय ने उन्हें शिष्टतापूर्ण किन्तु व्यंग्यात्मक ढंग से उत्तर दिया।

7. मदन और ड्राइवर के बीच के विवाद के द्वारा कहानीकार क्या बताना चाहता है?

=> मदन और ड्राइवर के बीच के विवाद के द्वारा कहानीकार यह बताना चाहता है कि बड़े लोग सामाजिक भेदभाव के माध्यम से अपना वर्चस्व कायम

Scanned with CamScanner

रखना चाहते हैं। मदन उन्हीं के यहाँ काम कर रहे एक किरानी का बेटा है, इसपर भी उन्हीं का नौकर है। इसपर अपने को कृतिपरायण इंसान तथा जवाबदेह साबित करना चाहता है, जबकि मदन किरानी का पुत्र होने के कारण इसपर को निम्न दृष्टि से देखता है। ऊँच नीच की भावना को व्यक्त करना चाहता है।

12. आपकी दृष्टि में कहानी का नायक कौन है? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

=> मेरे विचार से कहानी का नायक सेनपुत्र काशू है क्योंकि उसी के कारण पाँचों बहनें उपेक्षित हैं। मदन मार खाता रहता है तथा पिता की महत्वाकांक्षा तथा सफेदपोशी का पोल खुलता है और कहानी अपने चरम की ओर बढ़ती है। लेखक के अनुसार सेन साहब पुत्र-जन्म से पूर्व कुछ और थे, किंतु पुत्र का जन्म होते ही अपने नियमों में बदलाव कर लेते हैं। पुत्र की शरारत को हँसकर टाल देते हैं, क्योंकि वह नाउम्मीद वृद्धावस्था की संतान है।

Scanned with CamScanner

3. भारत से हम क्या सीखें *

(मैक्समूलर)

1. मेघदूत नामक पुस्तक का अनुवाद मैक्समूलर ने किस भाषा में किया ?
→ जर्मन भाषा में ।

2. मैक्समूलर को सिद्धांतियों का पक्षपाती किसने कहा?
→ स्वामी विवेकानन्द ।

3. संस्कृत भाषा और यूरोपियन भाषा का तुलनात्मक व्याख्यान किसने दिया ?
→ मैक्समूलर ने ।

4. महारानी विक्टोरिया ने नाइट की उपाधि किसे प्रदान की थी ?
→ मैक्समूलर को ।

5. कठ और केन उपनिषद का अनुवाद मैक्समूलर ने किस भाषा का अध्ययन किया ?
→ जर्मन में ।

6. लिपजिंग विश्व विद्यालय में मैक्समूलर ने किस भाषा का अध्ययन किया ?
→ संस्कृत का ।

7. इग्निस भाषा का शब्द ~~क्या~~ है ?
→ लैटिन ।

8. जनरल कनिंघम का संबंध किनसे है ?
→ ~~[illegible]~~ पुरातत्व से ।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

9. किस 'दारिस' नामक सोने के सिक्का का थोड़ा कहाँ मिला था ?
→ वाराणसी में ।

10. नालंदा विश्वविद्यालय कहाँ पर स्थित है ?
→ बिहार ।

11. 'नृवंश विद्या' का संबंध किससे है ?
→ मानव विज्ञान से ।

12. 'दारिस' क्या है ?
→ सोने की प्राचीनकाल सिक्का ।

13. 'वारेन हेस्टिंग्स' कौन था ?
→ भारत का गवर्नर जेनरल ।

14. प्लेटो का संबंध किस देश से है ?
→ ~~यूनाम~~ यूनान से ।

15. 'शाहनामा' का रचनाकाल है ?
→ दसवीं - ग्यारहवीं सदी ।

16. 'मुण्डा' किस देश की जाति है ?
→ भारत ।

17. संस्कृत का 'अग्नि' शब्द लैटिन में किस रूप में मिलता है ?
→ इग्निस ।

18. सर विलियम जोन्स ने भारत की यात्रा कब की थी ?
→ 1783 ई.

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

19. प्रश्न मानव का अर्थ है :-
→ प्राचीन मानत ।

20. हर्कस थे :-
→ वनस्पति वैज्ञानिक ।

21. भारत कहाँ बसता है ?
→ गाँवों में ।

22. पारसीयों के धर्म का क्या नाम है ?
→ जरथुस्त ।

23. मैक्समूलर का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
→ 6 Dec 1823, डेसाउ जर्मनी नामक क्षेत्र

24. मैक्समूलर के पिता का नाम –
→ विल्हेल्म मूलर ।

25. कौन प्राचीनतम भाषा है ?
→ संस्कृत ।

26. मैक्समूलर की मृत्यु कब हुई ।
→ 28 Oct 1900

27. किसके अध्ययन क्षेत्र में भारत के कारण नवजीवन का सञ्चार हो चुका है ?
→ नीतिकथा ।

28. दारिस नामक सोने के सिक्कों से भरा घड़ा किसे मिला था ?
→ वारेन हेस्टिंग्स ।

1. "सम्पूर्ण भूमंडल में सर्वविध सम्पदा और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण देश भारत है।" लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

⇒ "सम्पूर्ण भूमंडल में सर्वविशिष्ट सम्पदा और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण देश भारत है, लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है, क्योंकि यही वह देश है जहाँ सर्वप्रथम वेद की रचना हुई थी। यही पर हिमालय जैसा हिममंडित पर्वत है, गंगा जैसी पवित्र नदियां है तो फल - फूलों से लदे वन प्रांत है।

2. लेखक की दृष्टि में सच्चे भारत के दर्शन कहाँ हो सकते हैं और क्यों?

⇒ लेखक की दृष्टि में सच्चे भारत के दर्शन गाँवों में हो सकते हैं, क्योंकि गाँवों में ही भारत की आत्मा निवास करती है, जहाँ कलकत्ता, बम्बई, मद्रास तथा अन्य शहरों जैसी बनावटी चमक - दमक नहीं मिलती, बल्कि वहाँ जीवन की सादगी, त्याग, श्रम उत्कृष्टतम पारस्परिक संबंध आदि को मिलते है।

5. लेखक ने वारेन हेस्टिंग्स से संबंधित किस दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना का हवाला दिया और क्यों?

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

=> लेखक ने वारेन हेस्टिंग्स से संबंधित उस दुर्भाग्यपूर्ण के संबंध में बताया है कि जब हेस्टिंग्स भारत का गवर्नर जनरल था। उसे 172 दारिस नामक सोने के सिक्कों से भरा एक घड़ा मिला था। उसने उन सिक्कों को अपने मालिक ईस्ट इण्डिया कंपनी के निर्देशक मंडल की सेवा में इसलिए भेजवा दिया कि यह एक ऐसा उपहार होगा जिसकी गणना उसके द्वारा प्रेषित सर्वोत्तम दुर्लभ वस्तुओं में होगी।

9. धर्मों की दृष्टि से भारत का क्या महत्व है?

=> लेखक की मान्यता है कि धर्मों की दृष्टि से भारत का विशेष महत्व है, क्योंकि यह ब्राह्मण अथवा वैदिक धर्म की भूमि है, बौद्ध की जन्म भूमि है। पारसियों के जरथुष्ट्र धर्म की शरणस्थली है। तात्पर्य यह कि वेद रचना के कारण वैदिक धर्म की स्थापना हुई तो भगवान बुद्ध का जन्म भारत में ही हुआ था। उनका सिद्धान्त बौद्ध धर्म के रूप में प्रचारित हुआ। पारसी धर्म के संस्थापक जरथुष्ट्र ने अपने धर्म के प्रचार के लिए इसे विशेष उपयुक्त माना था। इसलिए यह उस धर्म की शरण स्थली है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

4. नाखून क्यों बढ़ते हैं :-
(हजारी प्रसाद द्विवेदी)

1. नाखून का इतिहास किस पुस्तक में मिलता है?
→ कामसूत्र में।

2. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने डी० लिट० की उपाधि किस विश्वविद्यालय से प्राप्त की।
→ लखनऊ वि० वि० से।

3. चन्द्रकार, त्रिकोण, दंतुल, वर्तुलाकार आकृतियों का संबंध मानव के किस अंग से है?
→ नख से।

4. अलक्तक का अर्थ है –
→ आलता।

5. द्विवेदी जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार किस रचना पर मिला था?
→ आलोक पर्व पर

6. प्राचीन मानव काल में प्रमुख अस्त्र शस्त्र क्या था?
→ नाखून

7. आर्यों के पास क्या था –
→ लोहे का अस्त्र, घोड़े, मिट्टी का घर।

8. कामसूत्र किसकी रचना है?
→ वात्स्यायन की।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

9. सब पुराने अच्छे नहीं होते और सब नए खराब नहीं होते, ऐसा किसने कहा?
→ कालिदास ने।

10. नखधर मनुष्य आज किस पर भरोसा कर रहा है?
→ एटम बम पर।

11. नाखून क्यों बढ़ते हैं के निबंधकार है?
→ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।

12. द्विवेदी जी ने निर्लज्ज अपराधी किसे कहा है?
→ नाखून को।

13. 'सिक्थक' का अर्थ होता है?
→ मोम।

14. महाभारत क्या है?
→ पुराण।

15. किस देश के लोग बड़े-बड़े नख पसंद करते थे?
→ गौड़ देश के।

16. हिरोशिमा कहाँ है?
→ जापान में।

17. किस देश के लोग छोटे नख पसंद करते?
→ दाक्षिणात्य।

18. नाखून क्यों बढ़ते हैं किस प्रकार का निबंध है?
→ ललित।

19. दधि दधीचि की हड्डी से क्या बना था?
→ इन्द्र का वज्र।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

20. हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म कब हुआ?
→ 1907 ई० में।

21. कौन मनुष्य का आदर्श नहीं बन सकती?
→ बंदरियाँ।

22. नख किसका प्रतीक है?
→ मानवता और पशुता का।

23. पृथ्वीराज रासो किनका सम्पादन है?
→ हजारी प्रसाद द्विवेदी।

24. हजारी प्रसाद द्विवेदी को कब ~~पद्मविभूषण~~ पद्मभूषण की उपाधि से सम्पादित किया गया?
→ 1957 ई० में।

25. अशोक के फूल किसकी रचना है?
→ हजारी प्रसाद द्विवेदी।

26. लेखक के अनुसार मनुष्य के नखून किसके जीवंत प्रतीक है?
→ पाशवी वृत्ती की।

27. हजारी प्रसाद द्विवेदी की मृत्यु कब और कहाँ हुई?
→ 1979, दिल्ली।

28. सहजात वृत्तियाँ किसे कहते है?
→ अनजान स्मृतियों की।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

1. नाखून क्यों बढ़ते हैं? यह प्रश्न लेखक के आगे कैसे उपस्थित हुआ? तथा बढ़ते नाखूनों द्वारा प्रकृति मनुष्य को क्या याद दिलाती है?

=> नाखून क्यों बढ़ते हैं, यह प्रश्न लेखक के आगे तब उपस्थित हुआ जब उनकी पुत्री ने उनसे यह प्रश्न किया कि नाखून क्यों बढ़ते हैं। बढ़ते नाखूनों द्वारा प्रकृति मनुष्य को यह याद दिलाती है कि जब मनुष्य वनमानुष जैसा जंगली था, तब उसे अपनी जीवन रक्षा के लिए नाखूनों की जरूरत थी। और शत्रुओं से वे अपनी रक्षा नाखूनों द्वारा ही करते थे। अतः प्रकृति मनुष्य को आदिमानव रूप की याद दिलाती है।

4 Q. मनुष्य बार-बार नाखूनों को क्यों काटता है? तथा नाखूनों को उपयोग में लाना मनुष्य ने कैसे शुरू किया? लेखक ने इसके संबंध में क्या बताया है?

=> नाखून मनुष्य की पाशवी - वृत्ति का प्रतीक है। मनुष्य इसे बार - बार काटकर अपनी पशुता को मिटाना चाहता है। वह चाहता है कि

उसके पास बर्बर युग का कोई अवशेष न रह जाए। इसी उद्देश्य से मनुष्य बार-बार नाखूनों को काटता है। लेखक का कहना है कि कुछ हजार वर्ष पूर्व मनुष्य ने नाखून को सुकुमार विनोदों के लिए उपयोग में लाना शुरू किया था। भारतवासी नाखूनों को खूब सँवारता था। उनके काटने की कला काफी मनोरंजक थी। विलासी नागरिकों के नाखून त्रिकोण, वर्तुलाकार, चन्द्राकार, दंतुल आदि विविध आकृतियों के रखे जाते थे।

7. लेखक क्यों पूछता है कि मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है, पशुता की ओर या मनुष्यता की ओर स्पष्ट करें।

=> लेखक लोगों की हिंसक प्रवृत्ति को देखकर यह जानना चाहता है कि मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है? पशुता की ओर अथवा मनुष्यता की ओर? अस्त्र बढ़ाने की या अस्त्र घटाने की ओर? अस्त्र बढ़ना अर्थात नए-नए अस्त्रों के निर्माण से यह सिद्ध होता है कि मनुष्य पशुता की ओर बढ़ रहा है। उसके भीतर पशुता की चिन्ह आज भी विद्यमान है। इसीलिए एटम बम जैसे विनाशकारी अस्त्र का निर्माण कर रहा है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

1. लेखक ने किस प्रसंग में कहा कि बंदरिया मनुष्य का आदर्श नहीं बन सकती? लेखक का अभिप्राय स्पष्ट करें।

=> लेखक ने पुराने के मोह में चिपटे रहने के प्रसंग पर कहा है कि पुराने का मोह सब समय वांछनीय नहीं होता मेरे बच्चों को गोद में दबाए रहने वाली बंदरिया मनुष्य का आदर्श नहीं हो सकती। कालिदास ने कहा था कि सब पुराने अच्छे नहीं होते और सब नए खराब नहीं होते हैं।

II. निबंध में लेखक ने किस बूढ़े का जिक्र किया है? लेखक दृष्टि में बूढ़े के कथनों की सार्थकता क्या है?

=> निबंध में लेखक ने बूढ़े का जिक्र करके महात्मा गाँधी की ओर संकेत किया है। गाँधीजी लोगों को सच्चा सुख पाने के लिए अपने भीतर देखने की सलाह दी। उन्होंने असत्य को दूर करने, क्रोध एवं द्वेष को त्यागने, ~~द्वारा~~ दूसरों के कल्याण के लिए कष्ट सहने तथा आत्म संतुष्ट रहने का संदेश दिया।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

पद्य - खण्ड

1. (i) राम नाम बिनु, बिरथे जाणि जनमा
(ii) जो नर दुख में दुख नहिं मानै
(गुरुनानक)

1. तलवंडी वर्तमान में कहा है?
→ पाकिस्तान में।

2. वर्णाश्रम और कर्मकाण्ड का विरोध किसने किया?
→ गुरुनानक ने।

3. गुरुनानक ने किस भाषा में कविता लिखी?
→ पंजाबी और हिन्दी।

4. सिख धर्म के पांचवें गुरु कौन थे?
→ ~~गुरुनानक~~ अर्जुन देव

5. राम नाम के कीर्तन पर किसने जोर दिया
→ गुरुनानक ने।

6. नारियों को उचित स्थान के लिए आवाज बुलन्द किसने किया?
→ गुरुनानक ने।

7. जाणि का अर्थ है?
→ संसार।

8. किसके बिना इस संसार में जन्म लेना बेकार है?
→ राम नाम के बिना।

9. जपुजी और सोहिला किसकी रचना है?
→ गुरुनानक की।

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

10. क्या कहते हुए नानक ने अपना प्राण त्याग दिया ?
→ वाह गुरु ।

11. गुरु नानक की रचनाओं का संग्रह किसने किया ?
→ गुरु अर्जुन देव

12. गुरु नानक की रचनाओं के संग्रह का क्या नाम है?
→ गुरु ग्रंथ साहब ।

13. 'आसदी वार' किसकी रचना है?
→ गुरुनानक

14. गुरुनानक का जन्म कहा हुआ था?
→ ननकाना साहब में ।

15. 'रहिरास' किसकी कृति है?
→ गुरुनानक की ।

16. गुरुनानक किस भक्तिधारा के कवि है?
→ निर्गुण भक्तिधारा ।

17. गुरुनानक की मृत्यु कब हुई
→ 1539 ई० में ।

18. ब्रह्म का निवास कहा होता है?
→ काम-क्रोधहीन व्यक्ति में ।

19. ननकाना साहब कहाँ अवस्थित है?
→ पाकिस्तान में ।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

20. गुरुनानक की कौन-सी रचना है?
→ सोहिला, जपुजी, आसा दी वार।

21. गुरुनानक जी ने किसे सम्मान दिया?
→ स्त्री को।

22. कौन पहले संत हैं जिन्होंने विदेशी आक्रमणकारियों का विरोध किया था?
→ गुरु नानक।

23. गुरुनानक का दर्शन किस कवि के कथन से मिलती है?
→ कबीरदास।

24. गुरुनानक का जन्म कब हुआ?
→ 1469 ई० में।

25. गुरुनानक जन्म कहाँ हुआ था?
→ तलवंडी, लाहौर में।

26. गुरुनानक के माताजी का नाम क्या था?
→ तृप्ता।

28. सुलक्षणी कौन थी?
→ गुरुनानक की पत्नी।

29. गुरुनानक के जन्म स्थान को क्या कहते हैं?
→ ननकाना साहब।

30. वाणी कब विष के समान हो जाती है?
→ राम नाम के बिना।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

3। गुरुनानक के पद किस भाषा में रचित हैं?
→ पंजाबी मिश्रीत ब्रजभाषा।

4। 'रहिरास' किसकी रचना है?
→ गुरुनानक।

* कवि परिचय => गुरु नानक का जन्म लाहौर जिले के तलवंडी नामक गांव में सन् 1469 में हुआ था यह स्थान 'नानकाना' साहब नाम से प्रसिद्ध है जो अब पाकिस्तान में है। इनके पिता का कालूचंद खत्री तथा माँ का नाम तृप्ता था। तथा इनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं। जैसे - जपुजी, आसादीवार, रहिरास तथा सोहिला आदि।

1. कवि किसके बिना जगत में यह जन्म व्यर्थ मानता है?

=> कवि राम - नाम के जप के बिना जगत में यह जन्म व्यर्थ मानता है। अर्थात, मानव - शरीर शरीर को धारण करने पर जो राम के नाम का स्मरण अर्थात सच्चे हृदय से जप नहीं करता है। तथा संसारिक विषय वासनाओं अर्थात बाह्याडंबर में फंसा रह जाता है।

Scanned with CamScanner

3. नाम - कीर्तन के आगे कवि किन कर्मों की व्यर्थता करता है?

=> कवि गुरु का का कहना है कि नाम - कीर्तन ही व्यक्ति को इस दुःखमय संसार में शांति प्रदान कर सकता है। पूजा पाठ, संध्या तर्पण वेशभूषा से आन्तरिक शुद्धि नहीं होती, क्योंकि इसमें बाह्याडंबर के कारण अहंकार भावना जन्म लेती है, जब कि नाम - कीर्तन से हृदय में प्रेम - रस का संचार होने के कारण जीवन में सहजता आ जाती है।

6. कवि की दृष्टि में ब्रह्मा का निवास कहाँ है?

=> कवि की दृष्टि में ब्रह्मा का निवास अंतकरण में है। कवि का मानना है कि जब व्यक्ति सच्चे दिल से उस परमपिता परमेश्वर को याद करता है तब उसका अंत: करण प्रेम - रस से आलोड़ित हो जाता है। इसीलिए कवि कहता है कि ईश्वर का निवास न तो किसी मंदिर, मस्जिद में है और न ही पूजा पाठ, कर्मकाण्ड अथवा विशेष प्रकार की वेश - भूषा में है। बल्कि ईश्वर का निवास सच्चे प्रेम में है।

Scanned with CamScanner

7. गुरु की कृपा से किस युक्ति की पहचान हो जाती है?

=> गुरु नानक का कहना है कि जिस पर ईश्वर की कृपा हो जाती है, वह सारी सांसारिक विषय वासनाओं से मुक्त हो जाता है। ऐसा व्यक्ति सुख व दुःख दोनों ही स्थितियों में एक समान रहता है। ऐसा व्यक्ति कामनारहित तथा निस्पृह रहता है। तात्पर्य यह कि जिस हृदय में ब्रह्म का निवास होता है, उसे सांसारिक बातों से विरक्ति हो जाती है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

2. (i) प्रेम-अयानि श्री राधिका
(ii) फील कु फ़ंजन ऊपर वारौं 3.1

(रसखान)

1. रसखान का मूल नाम था ?
→ सैयद इब्राहीम ।

2. दानलीला किसकी रचना है?
→ रसखान की ।

3. रसखान कु रचना किसके शासन काल में हुआ?
→ जहाँगीर के ।

4. सुजान रसखान में किसकी भक्ति का वर्णन है ?
→ कृष्ण की ।

5. रसखान की काव्यभाषा है ?
→ ब्रजभाषा

6. स्वच्छंद काव्यधारा का प्रवर्तक कौन है ?
→ रसखान ।

7. अयानि का अर्थ है ?
→ खजाना ।

8. रसखान के रचनाकाल के समय किसका राज्यकाल था ?
→ जहाँगीर ।

9. किसने कहा था कि "इन मुसलमान हरिजनन पै कोटि हिन्दू वारिये" ?
→ भारतेन्दु हरिशचन्द्र ।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

10. रसखान के बारे में वार्ता किसमें मिलती,
→ 252 वैष्णवों /

11. प्रेमवाटिका के रचनाकार कौन
→ रसखान /

12. रसखान को किसने दीक्षा दी?
→ गोस्वामी विट्ठलनाथ /

13. रसखान की समाधि कहाँ है?
→ मथुरा

14. रसखान हिन्दी के लोकप्रिय कवि कौन थे?
→ जातीय /

15. स्वामी विट्ठलनाथ ने रसखान को कहाँ दीक्षा दी?
→ पुष्टिमार्ग /

16. रसखान ने श्रीकृष्ण का लीलागान किसमें किया है?
→ सवैयों में /

17. आधुनिक काल के साहित्यकार कौन थे?
→ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र /

18. प्रेम-वरन का अर्थ है?
→ प्रेम का वर्णन करना /

19. रसखान का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
→ 1533 ई. में / दिल्ली

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

२०. डॉ० विजयेन्द्र के अनुसार रसखान की मृत्यु कब हुई?
→ १६१८

२१. प्रेम अयनि श्री राधिका में कितने दोहे संकलित हैं?
→ चार।

२२. करील के कुंजन ऊपर वारौं के अन्तर्गत कितने सवैया संकलित हैं?
→ एक।

२३. दानलीला में कितने छन्द संकलित हैं?
→ ग्यारह।

२४. 'मालिन - माली' किसे कहा गया है?
→ राधा - कृष्ण।

२५. राधा - कृष्ण के संवाद को किस पद्य-प्रबन्ध में संकलित किया गया है?
→ दान लीला।

२६. 'चितचोर' किसे कहा गया है?
→ कृष्ण को।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

* कवि - परिचय => हिन्दी साहित्य के कृष्णभक्त कवि रसखान का पूरा नाम सैय्यद इब्राहिम खानखाना बताया जाता है। इनका जन्म 1548 ई. के आसपास राजवंश से संबंधित एक संपन्न पठान परिवार दिल्ली में हुआ था। ये मूलत: मुसलमान थे, फिर भी इन्होंने जीवन पर्यन्त कृष्णभक्ति का गान किया। इनकी रचनाएँ इस प्रकार है — सुजान रसखान तथा प्रेमवाटिका। सुजान रसखान में कृष्ण - प्रेम पर आधारित कवित एवं सवैये है।

1. कवि ने माली - मालिन किन्हें और क्यों कहा है?

=> कवि ने राधा - कृष्ण को माली - मालिन इसलिए कहा है क्योंकि ये दोनों प्रेम - वाटिका के युगल रूप है। इन्हीं दोनों के आपसी संयोग से कवि का रसिक हृदय प्रेम रस से अभिसिक्त होता है। जैसे माली - मालिन के संयोग से वाटिका शोभा पाती है, वैसे ही प्रेम - स्वरूप राधा एवं प्रेम पुष्ट होता है।

3. कृष्ण को चोर क्यों कहा गया है? कवि का अभिप्राय स्पष्ट करें।

Scanned with CamScanner

⇒ कवि ने कृष्ण को चोर इसलिए कहा है; क्योंकि जिस प्रकार चोर कोई सामान चुराकर ले जाता है। तो समान वाला उस वस्तु से वंचित हो जाता है। उसी प्रकार कृष्ण का अलौकिक सौन्दर्य कवि के मन को चुरा लिया है। अर्थात आकृष्ट कर लिया है। फलतः उसका मन उसके अधीन नहीं रहता।

4. सवैये में कवि की कैसी आकांक्षा प्रकट होती है? भावार्थ बताते हुए स्पष्ट करें।

⇒ सवैये में कवि की कृष्ण एवं ब्रज के प्रति कवि का पूर्ण समर्पण प्रकट होता है। कवि की उत्कट आकांक्षा है कि वह किसी भी रूप में ब्रज में ही निवास करे। वह संसार के हर सुख का त्याग कर सकता है, लेकिन कृष्ण तथा ब्रज का त्याग कर सकता है, लेकिन कृष्ण तथा ब्रज का त्याग सर्वथा असंभव है। तात्पर्य यह कि कवि रसखान कृष्ण प्रेम में इतना रम गये थे कि उन्हें कोई भी सुख अच्छा नहीं लगता था। इसीलिए कवि अपनी हार्दिक इच्छा प्रकट करता है कि यदि कृष्ण की लाठी तथा कंबल मिल जाए तो वह तीनों ~~लोगों~~ लोकों के राज सुख त्याग कर देगा।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

3. (i) अति सूधो सनेह को मारग है
(ii) मो अँसुवानिहिं लै बरसौ

(घनानंद)

1. घनानंद किस काल के कवि थे?
→ रीतिकाल ।

2. सुजानसागर किसकी कृति है?
→ घनानंद ।

3. किसे प्रेम की पीर का कवि कहा जाता है?
→ घनानंद ।

4. रीतिमुक्त काव्यधारा के सिरमौर कवि किसे कहा जाता है?
→ घनानंद ।

5. घनानंद की भाषा क्या है?
→ ब्रजभाषा

6. प्रेम घन किस युग के कवि थे?
→ भारतेन्दु युग ।

7. घनानंद किससे प्रेम करते थे?
→ सुजान नामक नर्तकी से ।

8. घनानंद कवि हैं?
→ पीर के

9. मुगल बादशाह मुहम्मदशाह रंगीले के यहाँ क्या काम करते थे?
→ मीरमुंशी का ।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

10. परहित के लिए देह कौन धारण करता है?
→ बादल

11. निःस्वार्थ भाव से, निश्चल होकर अपने को समर्पित कर देना किसका कथन है?
→ घनानंद का।

12. घनानंद की महत्वपूर्ण रचना है?
→ सुजानसागर

13. घनानंद ग्रंथावली का सम्पादन किसने किया?
→ विश्वनाथ मिश्र

14. घनानंद की कीर्ति का कौन-कौन से आधार?
→ सुजानहित, घन आनंद कवित

15. 'मो अंसुवानिहिं लै बरसौ' में किसकी बात कही गई है?
→ विरह वेदना।

16. घनानंद किनके द्वारा मारे गए थे
→ नादिरशाह के सैनिक द्वारा।

17. ~~घनानंद की मृत्यु कब हुई~~
घनानंद की मृत्यु कब हुई?
→ 1739

18. कवि ने परजन्य किसे कहा गया है
→ बादल।

19. 'रज' का अर्थ है?
→ धूल।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

२०. एकांतिक और एकांगी प्रेम के कवि हैं:
→ घनानंद ।

२१. शंकालु हृदय नहीं कर सकता?
→ प्रेम ।

२२. घनानंद की भाषा है?
→ शुद्ध परिष्कृत ।

२३. ज्ञान मार्ग होता है?
→ कठिन ।

२४. जीवन दायक है?
→ विशेषण ।

* कवि - परिचय => रीतिमुक्त काव्यधारा के सिरमौर कवि घनानंद का जन्म सन् 1689 में हुआ था। ये तत्कालीन मुगल बादशाह मोहम्मद शाह रंगीला के यहाँ मीर मुंशी थे। ये अच्छे गायक तथा श्रेष्ठ कवि थे।

इनकी रचनाएँ इसप्रकार हैं — सुजानसागर, विरहलीला, रसकेलि वल्ली।

1. कवि प्रेममार्ग को 'अति सुधो' क्यों कहता है? इस मार्ग की विशेषता क्या है?

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

=> कवि प्रेममार्ग को 'अति सूधो' इसलिए कहता है, क्योंकि यह मार्ग अति सहज, सरल तथा सुगम होता है। इसमें टेढ़ापन तथा धूर्तता लेश मात्र नहीं होते। हृदय की उपज होने के कारण यह भाव प्रधान होता है। सच्चा प्रेम अनन्त की ओर ले जाता है।

४. 'मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं' से कवि का क्या अभिप्राय है?

=> मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं से कवि का अभिप्राय है कि प्रेमी सच्चे दिल से अपना तन-मन प्रेमिका का प्रेम पाने के लिए अर्पित कर देता है। किंतु प्रेमिका उस प्रेम के प्रति कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करती है। अतः वह अपनी मुस्कुराहट से प्रेमी के व्यथित हृदय को शांति भी प्रदान नहीं करती है। तात्पर्य यह कि प्रेमिका अति निष्ठुर या कठोर दिल है। वह प्रेमी की पीड़ा पर जरा भी ध्यान नहीं देती है।

5. कवि कहाँ अपने आँसुओं को पहुँचाना चाहता है और क्यों?

=) कवि अपने आंसुओं को प्रेमिका के आंगन में पहुंचाना चाहता है, क्योंकि इन आंसुओं के माध्यम से कवि अपनी पीड़ा को सुजान के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता है। ताकि प्रेमी की व्यथा जानकर वह द्रवित हो सके। अतः कवि की अन्योक्ति के माध्यम से विरह वेदना से भरे अपने हृदय की पीड़ा को अपनी प्रेमिका के समक्ष व्यक्त करना चाहता है। कवि को विश्वास है कि उसकी प्रेम - वेदना से जब उसकी प्रेमिका अवगत होगी तब उसे प्रेम की सच्चाई का बोध होगा।

4. स्वदेशी (प्रेमघन)

Page No.
Date / /

1. प्रेमघन किस युग के साहित्यकार थे?
→ भारतेन्दु युग।

2. जीर्ण जनपद किसकी कृति है?
→ प्रेमघन।

3. स्वदेशी शीर्षक पाठ्यपुस्तक में संकलित कविता किस छंद में है?
→ दोहा।

4. विदेसी से कवि का क्या तात्पर्य है?
→ ब्रिटेन।

5. इनमें से नाट्यकृति है?
→ भारत सौभाग्य।

6. प्रेमघन का जन्म कब और कहा हुआ था?
→ 1855, मिर्जापुर में।

7. प्रेमघन की काव्य कृति क्या है?
→ हार्दिक हर्षादर्श।

8. अब्र नाम से इन्होंने किस भाषा में कविता की रचना की?
→ उर्दू।

9. कवि समाज की किस वर्ग की आलोचना करता है?
→ विदेशी चाल-चलन, विदेशी वेशभूषा, सुविधा भोगी।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

10. प्रेमघन की मृत्यु कब हुई?
→ 1922

11. प्रेमघन ने साप्ताहिक किस पत्रिका का सम्पादन किया?
→ नागरी नीरद।

12. प्रेमघन की प्रसिद्ध नाट्यकृति कौन-सी है?
→ प्रयाग रामागमन।

13. प्रेमघन ने मुख्य रूप से किस भाषा में काव्य की रचना की?
→ ब्रज

14. पराधीन भारत में चारों वर्णों में चाहता
→ दासवृत्ति

15. प्रेमघन के काव्य में प्राप्त होता है?
→ भक्ति भावना, समाजदशा, देशप्रेम।

16. प्रेमघन साहित्य सम्मेलन के किस अधिवेशन के सभापति बने?
→ कलकत्ता के।

17. रीत का अर्थ है
→ पाप पद्धति

18. भारत की अर्थव्यवस्था जर्जर हो गई है
→ अंग्रेजी नीति के कारण।

Scanned with CamScanner

19. भारतीय किस तरह से अंग्रेजी के दास हो गए हैं?
→ मन से।

२०. वस्तु शब्द है स्त्री
→ स स्त्रीलिंग।

२१ कृति ने समाज के किस वर्ग की आलोचना की है?
→ सुविधा भोगी वर्ग की।

२२. प्रेमघन अपना आदर्श किसे मानते हैं?
→ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Q:- साहित्य में कुल कितने रसों का वर्णन पाया जाता है?

Ans:- साहित्य में नौ रसों का वर्णन किया गया है। जैसे —

(i) हास्य रस → किसी वस्तु या व्यक्ति का विचित्र रूप से चित्रित करना, जैसे - अजीब ढंग की वेशभूषा, अटपटांग आभूषण को देखकर हृदय में जो विनोद पूर्ण भाव उत्पन्न होते हैं, उसे ही हम हास्य रस कहते हैं।
जैसे :-
हँसि हँसि भाजैं देखि दूलह दिगम्बर को
पाहुनी जेते रोर कहूँ अरथी धरी अहैं।
कहूँ हाड परो, कहूँ जरो अधजरो माँस
कहूँ गीध भीर मास नोचत अरी अहैं।

(ii) वीभत्स रस → जहाँ हम खून, पीब, हड्डी, दुर्गंध आदि को देखकर अपने हृदय में घृणा का भाव प्रकट करते हैं, वहाँ उसका स्थायी भाव हमारे हृदय में जो रस पैदा करता है उसे ही हम वीभत्स रस कहते हैं।
जैसे :- कहूँ धूम उठत, बरत कहूँ है चिता
कहूँ होत रोर, कहूँ अरथी धरी अहैं।
कहूँ हाड परो, कहूँ जरो अधजरो माँस
कहूँ गीध भीर, माँसन नोचत अरी अहैं।

(iii) भयानक रस → जब किसी भयानक वस्तु या जीवन को देखकर भावी दुख की आशंका से हृदय में जो भाव उत्पन्न

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

होता है, उसे ही हम भयानक रस कहते हैं। जैसे -
एक ओर अजगरहि लखि एक ओर मृगराय
विकल बटोहि बीच ही, परयो मूर्छा खाय ॥

(iv) अद्भुत रस → किसी असाधारण वस्तु या दृश्य को देखकर हृदय में कुतूहल तथा आश्चर्य का भाव उत्पन्न होता है, इसी भाव को अनुभाव असंचारी भावों के संयोग से जिस रस की उत्पत्ति होती है उसे अद्भुत रस कहते हैं।
जैसे - अखिल भुवन चर-अचर सब हरिमुख में लखि मातु ।
चकित भई गद्गद् वचन विकसित दृग पुलकातु ॥

(v) शांत रस → जब संसार की निश्वरता तथा परमात्मा की सत्ता का ज्ञान हो जाता है तब सांसारिक उपभोग के प्रति हृदय में एक प्रकार की उदासीन अथवा वैराग्य हो जाता है, ऐसी स्थिति में मानव संसार का सबकुछ छोड़कर ईश्वर भक्ति में लीन हो जाता है, इसे ही हम शांत रस कहते हैं।
जैसे:- अब लौं नसानी, अब न नसैहौं ।
राम कृपा भव-निसा सिरानी, जागे फिरि न डसैहौं ॥

Page No.:
Date: / /

(vi) वत्सल रस :- संतान के प्रति अपने माता पिता का जो स्नेह उत्पन्न होता है, उसे वत्सल या वात्सल्य रस कहते हैं।

जैसे :- स्याम और सुन्दर दोउ जोरी।
निरखहिं छवि जननी तन तोरी।।
कबहुँ उछंग कबहुँ वर पलना।
मात दुलारहिं कहिं प्रिय ललना।।

(vii) श्रृंगार रस :- प्रेमी-प्रेमिका के मन में वासना रूप से वर्तमान प्रेम या रति भाव जब रसावस्था में पहुंचकर आस्वादन की योग्यता प्राप्त कर लेता है तो वहाँ श्रृंगार रस होता है। इसका स्थायी भाव रति है।

जैसे :- देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहचाने।
थके नयन रघुपति छवि देखी। पलकन हूँ परिहरि निमेखी।

(viii) करुण रस :- जब अपनी प्रिय प्रिय वस्तु या इष्ट वस्तु के नाश से जब शोक होता है, तब यही शोक करुण रस में बदल जाता है, उसे ही करुण रस कहते हैं।

जैसे :- अर्ध राति गयी कपि नहिं आवा।
राम उठाइ अनुज उर लावा।।

(ix) वीर रस :- शत्रु का उत्कर्ष दीनों की दुर्दशा, धर्म की हानि को देखकर इनको मिटाने के लिए जब किसी के हृदय में उत्साह का भाव जाग्रत हो जाता है, तो वह

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

आविभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भावों के संयोग से वीर रस में बदल जाता है। जैसे :-

- सौमित्रि से घननाद का रव अल्प भी न सहा गया।
निज- शत्रु को देखे बिना, उनसे तनिक न रहा गया।

(५) रौद्र रस :- शत्रु या किसी अत्याचारी द्वारा किये गये अत्याचारों को देखकर या गुरुजनों की निंदा सुनकर जब मन में एक प्रकार क्षोभ होता है, और इस क्षोभ से मनुष्य किसी पर चोट करता है, उसे ही रौद्र रस कहते हैं। जैसे :-

लखन सक्रोप वचन जब बोले, डगमगाई सब दिग्गज डोले।

→ उस काल मारे क्रोध के तनु कॉपने उसका लगा।
मानो हवा के वेग से सोता हुआ सागर जगा॥

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

वर्णिका (भाग - 2)

1. दही वाली मंगम्मा

1. दही वाली मंगम्मा का कथानक कौन है, तथा मंगम्मा का चरित्र-चित्रण कीजिए-

Ans- दही वाली मंगम्मा का कथानक बेंगलूर (वर्तमान में बंगलरु) की रहनेवाली संभ्रान्त महिला थी जिसे मंगम्मा मांजी कहती थी। बेटा पत्नी के बात में आकर उसे छोड़ सकता है। पत्नी का श्रृंगार पति है, पति का अभाव उसे सदा खटकता है, किन्तु पति के प्रति रत्तीभर भी क्षोभ नहीं है। मंगम्मा संपूर्ण भारतीय नारीत्व का प्रतिनिधित्व करती है।

2. मंगम्मा की अपनी बहू के साथ किस बात को लेकर विवाद था।

Ans- मंगम्मा का अपनी बहू के साथ अपने पोते को लेकर विवाद था। बहू पोते को जब तब पीट दिया करती थी, इसके लिए मंगम्मा उसे मना करती थी। किन्तु वह मंगम्मा के साथ लड़ जाती है।

3. बहू ने सास को मनाने के लिए कौन सा तरीका अपना?

Ans- बहू बुद्धिमती थी। जब बहू रंगप्पा के द्वारा ज्ञात हुआ कि उसकी सास ने रंगप्पा को कर्ज देने की स्वीकृति स्वीकृति प्रदान की है। तब उसने बेटे की ढाल बनाकर पैसे लेने की

२

तरकीब सोचने लगी। वह जानती थी कि उसकी सास अपने पोते से बहुत प्यार करती है। उसने अपने बेटे को दादी के पास ही रहने के लिए भेज दिया। बच्चा जब दादी के साथ बाजार जाने को मचल रहा था तो बहू ने उसे समझाया। अपनी गलती भी उन्होंने स्वीकार की। पोता ही समझौते का जरिया बन गया।

5. रंगप्पा कौन था और वह मंगम्मा से क्या चाहता है?

Ans- रंगप्पा गाँव का जुआरी और आवारा लड़का था। वह धन के लोभ में दही बेचकर आते समय मंगम्मा के साथ छेड़छाड़ किया करता था और उससे पैसे भी झटक लेना चाहता था। इतना ही नहीं वह मंगम्मा को अनाथ समझकर उसकी इज्जत भी लूटना चाहता था।

९. ढहते विश्वास

1. ढहते विश्वास कहानी में आए बाढ़ के दृश्यों का चित्रण अपने शब्दों में करें।

Ans: ढहते विश्वास कहानी में वर्णित बाढ़ बहुत भयंकर थी। कोई बांध के साल-पास सब गाँव बह गए। कितने लोग मरे इसका कोई अनुमान पाता नहीं था। बच्चे-बूढ़े सब एक-दूसरे को खोज रहे थे। पानी पर लोगों का शव और जीव-जंतु बह रहे थे।

५. ढहते विश्वास कहानी शीर्षक की सार्थकता पर विचार करें।

Ans: घटित घटना के आधार पर ही लेखक ने कहानी का शीर्षक 'ढहते विश्वास' रखा है। इस कहानी की विषयवस्तु पर आधारित है तथा इसका केन्द्र बिन्दु है। बोलने में सहज तथा समझने में सहज है। देवी-देवताओं के प्रति लोगों की आस्था और विश्वास ढहने का चित्रात्मक वर्णन है अतः सार्थक है।

6. गुणानिधि का चरित्र चित्रण करें –

Ans: गुणानिधि लक्ष्मी के पड़ोस का लड़का था। वह कटक में पढ़ता था। गाँव के लड़के को इकट्ठा करके स्वयं सेवक दल का गठन करता था तथा अमर बाँध की रक्षा में जुट जाता था। लोगों को सदा सावधान रहने को कहता था।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

जिस मनुष्य पुजारी में पत्थर का कोयला, कोयला है, हीराकुण्ड वाला बनाया था वह मनुष्य कामी थोड़े ही मरा था। बाढ़ की विकरालता देख गाँव के वृद्ध महिला तथा असहायों को ऊँचे स्थान पर जाने प्रेरित करता है।

5. लक्ष्मी के व्यक्तित्व पर विचार करें।

Ans- लक्ष्मी देहाती अनपढ़ गरीब महिला थी वह अकेले स्वयं के साथ तीन-चार बच्चों का पालन पोषण करती थी। वह सरदार के यहाँ काम कर कुछ भी कमा भी लेती है थी। इस प्रकार लक्ष्मी मेहनती अनपढ़ देहाती किन्तु अनुभवी होशियार सतर्क साहसी चतुर तथा कष्टसहिष्णु महिला थी।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

भाषा - उच्चरित ध्वनि-संकेतों की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति अथवा जिसकी मदद से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय या सहयोग करते हैं, उस यादृच्छिक, रूढ़ ध्वनि-संकेत की प्रणाली को भाषा कहते हैं।

भाषा तीन प्रकार के होते हैं -

(i) भाषा ध्वनि-संकेत - सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भाषा ध्वनि-संकेत कहते हैं। जैसे - रेलगाड़ी का गार्ड ही झंडी दिखाकर यह भाव व्यक्त करता है कि रेलगाड़ी अब खुलने वाली है।

(ii) लिखित भाषा - जिस शब्द को लिखकर किसी को समझाने या बताने का प्रयास किया जाता है, उसे लिखित भाषा कहते हैं। जैसे - कुत्ता, हाथी, बिल्ली आदि।

(iii) मौखिक भाषा - जिन शब्दों को हम बोलकर किसी को समझाने का प्रयास करते हैं, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। जैसे - बच्चा, बूढ़ा, जवान आदि।

अनुनासिक (ँ) - ऐसे स्वरों का उच्चारण करते समय नाक से कम तथा मुँह से अधिक ध्वनि निकलती है, उसे अनुनासिक कहते हैं। जैसे - गाँव, दाँत, आँगन आदि।

अनुस्वार (ं) - यह स्वर के बाद आनेवाला व्यंजन है, जिनका उच्चारण करते समय नाक से अधिक तथा मुँह से कम ध्वनि निकलती है, उसे अनुस्वार कहते हैं। जैसे - अंश, हंस, अंगूर आदि।

निरनुनासिक - ऐसा स्वर वर्ण जिनका उच्चारण केवल मुँह द्वारा निकली गई ध्वनि से होता है, उसे निरनुनासिक कहते हैं। जैसे - इधर, उधर, आप, अपना, घर इत्यादि।

वर्ण

वर्ण वह मूल ध्वनि है जिनका खंड या टुकड़ा नहीं किया जा सकता है। जैसे - अ, आ, ह, र् इत्यादि।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं -

(i) स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण स्वतः होता है, उसे स्वर वर्ण कहते हैं, जैसे, अ, आ, ---

स्वर वर्ण के भेद -

(i) ह्रस्व स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में अति अल्प समय लगता है, उसे ह्रस्व स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - अ, इ, उ, ऋ।

(ii) दीर्घ स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में ह्रस्व स्वर वर्ण की अपेक्षा दोगुना समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(iii) प्लुत स्वर वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा तीन गुना समय लगता है, उसे प्लुत स्वर वर्ण कहते हैं। जैसे - ओऽम ! ॐ

व्यंजन वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में स्वर वर्ण की मदद ली जाती है, उसे व्यंजन वर्ण कहते हैं। जैसे - क् --- ह्।

व्यंजन वर्ण के भेद -

(i) स्पर्श व्यंजन - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण कंठ, तालु, मूर्द्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्श करने से होता है, उसे स्पर्श व्यंजन कहते हैं। जैसे - क वर्ग से प वर्ग तक।

(ii) अंतःस्थ व्यंजन - वैसे वर्ण जिनका उच्चारण जीभ, तालु, दाँत और ओष्ठ के स्पर्श से होता है, उसे अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। अंतःस्थ व्यंजन को अर्द्धस्वर भी कहा जाता है। जैसे - य, र, ल, व।

Scanned with CamScanner

(iii) ऊष्म व्यंजन - वैसे वर्ण जिनका उच्चारण हमारे शरीर के अंदर एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्म वायु से होता है, उसे ऊष्म व्यंजन कहते हैं। जैसे - श, ष, स, ह।

वायु प्रक्षेप की दृष्टि से व्यंजन वर्ण के दो भेद होते हैं —

(i) अल्पप्राण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में श्वास पहले से अल्प मात्रा में निकले तथा जिनमें 'हकार' जैसी ध्वनि नहीं होती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण तथा अंतःस्थ व्यंजन अल्पप्राण व्यंजन हैं।

(ii) महाप्राण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में श्वास अधिक मात्रा में तथा हकार जैसी ध्वनि विशेष रूप से निकलती है, उसे महाप्राण व्यंजन कहते हैं, जैसे - स्पर्श व्यंजन का दूसरा एवं चौथा वर्ण तथा ऊष्म व्यंजन वर्ण महाप्राण व्यंजन हैं।

नाद की दृष्टि से व्यंजन वर्ण के दो भेद होते हैं -

(i) अघोष वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करने में हमारी स्वरतंत्रियाँ झंकृत नहीं होती हैं, उसे अघोष वर्ण कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला एवं दूसरा वर्ण तथा श, ष, स।

(ii) घोष वर्ण - वैसा वर्ण जिनका उच्चारण करते में हमारी स्वरतंत्रियाँ झंकृत होती है, उसे घोष वर्ण कहते हैं। जैसे - स्पर्श व्यंजन का पहला, तीसरा एवं पाँचवा वर्ण, सभी स्वर वर्ण, य, र, ल, व और ह।

विसर्ग (:) अनुस्वार की तरह प्रयोग होनेवाला यह एक व्यंजन वर्ण है तथा इसका उच्चारण 'ह' की तरह होता है। हिन्दी में अब इसका अभाव होता आ रहा है, लेकिन तत्सम शब्दों के प्रयोग में इसका आज भी उपयोग होता है। जैसे - पयःपान, प्रातःकाल, अतः इत्यादि।

बलाघात (स्वराघात) - बोलते समय अर्थ या उच्चारण की स्पष्टता के लिए जब हम किसी अक्षर पर विशेष बल देते हैं, तो इस क्रिया का बलाघात या स्वराघात कहा जाता है। जैसे - विष्णु, इन्द्र, राम, इत्यादि।

संगम - उच्चारण करते समय दो ध्वनियों के बिच जो विराम आता है, उसे संगम कहते हैं। जैसे - तुम्हारे, उत्पन्न इत्यादि।

अनुतान - बोलने के क्रम में जो सुर में उतार-चढ़ाव होता है, उसे अनुतान या सुरलहर कहते हैं। जैसे - कौन करेगा, तथा करेगा कौन?

लिपि - वर्णों को लिखने के लिए जिन सांकेतिक चिन्हों का प्रयोग किया जाता है, उसे लिपि कहते हैं। जैसे - ा, ि, ी, ---

ध्वनि - भाषा की सबसे छोटी इकाई को ध्वनि कहते हैं।

वर्तनी - वर्णों/शब्दों को ठीक ढंग से लिखने की रीति को वर्तनी कहते हैं।

Scanned with CamScanner

अयोगवाह - वैसा वर्ण जो न तो स्वर है न व्यंजन फिर भी वह ध्वनि का वहन करता है, उसे अयोगवाह कहते हैं। जैसे - अं, अः ।

हल् - व्यंजन वर्णों के निचे जब तिरछी रेखा (्) लगाई जाती है, उसे हल् कहते हैं। हल् लगाने का अर्थ है कि व्यंजन में स्वरवर्ण का बिलकुल अभाव है या व्यंजन आधा है। जैसे - क्, ख्, ...

वर्ण-विच्छेद - वर्णों को अलग करने की रीति को वर्ण-विच्छेद कहते हैं। जैसे - क - क्+अ ।

पंचमाक्षर - अनुनासिक वर्णों को ही पंचमाक्षर वर्ण कहते हैं। जैसे - ङ, ञ, ण, न, म ।

संयुक्ताक्षर - वैसा वर्ण जिसमें दो या दो से अधिक व्यंजन वर्णों का मेल होता है, उसे संयुक्त व्यंजन कहते हैं। जैसे, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ।

उच्चारण स्थान का विवरण -

स्थान	वर्ण	नाम
कंठ -	अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	- कंठ्य वर्ण
तालु -	इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श्	- तालव्य वर्ण
मूर्द्धा -	ऋ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र्, ष्	- मूर्द्धन्य वर्ण
दंत -	त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स्	- दंत्य वर्ण
ओष्ठ -	उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म्	- ओष्ठ्य वर्ण
कंठ-तालु -	ए, ऐ	- कंठ-तालव्य वर्ण
कंठ-ओष्ठ -	ओ, औ	- कंठोष्ठ्य वर्ण
दंतोष्ठ -	व्	- दंतोष्ठ्य वर्ण
नासिका -	ङ्, ञ्, ण्, न्, म्	- नासिक्य वर्ण

Scanned with CamScanner

व्याकरण

(1)

संज्ञा

संज्ञा - किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान भाव, गुण, दोष, मात्रा, अनुभव आदि को संज्ञा कहते हैं। जैसे- राम, पुस्तक, मेला, लज्जा इत्यादि

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं-

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष या खास व्यक्ति, स्थान, नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- राम, रामायण, हिमालय आदि

(ii) जातिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी जातिभर का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- पहाड़, गाय आदि

(iii) समूहवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी झुंड, समूह या समुदाय का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- सेना, वर्ग, सभा, गुच्छा इत्यादि।

(iv) द्रव्यवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी द्रव्य या धातु, वस्तु की परिमाण/मात्रा का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - सोना, चाँदी, घी, तेल इत्यादि

(v) भाववाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु के गुण, दोष धर्म, स्वभाव इत्यादि का बोध होता है उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- बुढ़ापा, ईमानदारी, महत्ता इत्यादि ।

(2)

सर्वनाम

सर्वनाम - संज्ञाओं अथवा नामों के बदले जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे- मैं, वह, तुम, आप, जो इत्यादि।

सर्वनाम के भेद -

(क) पुरुषवाचक - बोलने वाले, सुननेवाले तथा जिसके विषय में जो कुछ कहा या सुना जाये, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे मैं, हम, तुम, वह इत्यादि ।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद-

(i) उत्तम पुरुष - वक्ता / बोलनेवाले को उत्तम पुरुष कहते हैं। जैसे- मैं, हम, मैंने, मुझको इत्यादि।

(ii) मध्यम पुरुष - सुननेवाले को मध्यम पुरुष कहते हैं। जैसे- तुम, आप, तू, तुमलोग इत्यादि।

(iii) अन्यपुरुष - जिसके विषय में कुछ कहा या सुना जाये, उसे अन्य पुरुष कहते हैं। जैसे- वह, वे लोग, यह, वे, ये इत्यादि ।

(ख) निश्चयवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति या भाव के निश्चय होने का बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - यह, वह, इत्यादि ।

Scanned with CamScanner

(ग) अनिश्चय वाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव के अनिश्चय होने का बोध होता है, उसे अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - कोई, कुछ आदि।

(घ) संबंधवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से किसी संज्ञा के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - वह कौन है, जो दरवाजे पर खड़ा है।

(ङ) निजवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से स्वयं या निज का बोध होता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - मैं यह काम स्वयं ही कर लूँगा।

(च) प्रश्नवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम शब्द से प्रश्न पूछने या करने का बोध होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे - कौन, क्या, कहाँ, क्यों इत्यादि।

विशेषण

विशेषण - संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। जैसे - काला, मोटा, छोटा, कमजोर इत्यादि।

विशेषण के भेद -

(i) गुणवाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के गुण, दोष, स्वभाव, अवस्था का बोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - काला, मोटा, गोल, भूखा इत्यादि।

(ii) परिमाणवाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी वस्तु की माप-तौल या परिमाण/मात्रा का बोध होता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - थोड़ा, कम इत्यादि।

(iii) संख्यावाचक विशेषण - जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु की संख्या का बोध होता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - तीन पुस्तकें, चार कलमें, दो आदमी इत्यादि।

(iv) सार्वनामिक विशेषण - किसी संज्ञा के पहले आनेवाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे - यह पुस्तक अच्छी है।

Scanned with CamScanner

क्रिया

क्रिया - जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे- वह पढ़ता है। मैं सोता हूँ।

क्रिया के भेद -

(i) सकर्मक क्रिया - जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म रहता है तथा क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- राम पुस्तक पढ़ता है।

(ii) अकर्मक क्रिया - जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म नहीं रहता तथा क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे - राम पढ़ता है।

सहायक क्रिया -

मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट करने में जो क्रियाएँ सहायता करती हैं, उसे सहायक क्रिया कहते हैं। जैसे - है, था, रहे, गा रहे हैं इत्यादि।

प्रेरणार्थक क्रिया -

जिन क्रियाओं से यह पता चलता है कि कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे से करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे - राम, मोहन से काम करवाता है।

वाच्य

क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं, जिसके द्वारा यह ज्ञात होता है कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है तथा इनमें किसके अनुसार क्रिया के पुरुष, लिंग, वचन आदि आये हैं।

वाच्य के भेद -

(i) कर्तृवाच्य - क्रिया के उस रूपांतर को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो। जैसे - लड़का आम खाता है। मोहन पुस्तक पढ़ता है।

(ii) कर्मवाच्य - क्रिया के उस रूपांतर को कर्मवाच्य कहते हैं, जहाँ वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध होता है। जैसे - पुस्तक पढ़ी जाती है।

(iii) भाववाच्य - क्रिया के उस रूपांतर को भाववाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में भाव की प्रधानता रहती है। जैसे - धूप में चला नहीं जाता।

प्रविशेषण -

विशेषण की विशेषता बतलाने वाले शब्द को प्रविशेषण कहते हैं। जैसे- राम बहुत तेज विद्यार्थी है। यहाँ 'तेज' विशेषण है और उसका भी विशेषण है 'बहुत'।

Scanned with CamScanner

लिंग

संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु या भाव की जाति (स्त्री या पुरुष) का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। जैसे - राजा, घोड़ा, लड़का, कुता - कुतिया इत्यादि।

लिंग के भेद -

(i) पुँलिंग - जिस शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुँलिंग कहते हैं। जैसे - बालक, खटमल आदि।

(ii) स्त्रीलिंग - जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं। जैसे - रानी, घोड़ी, लड़की इत्यादि।

पुँलिंग शब्दों का लिंग-निर्णय -

(क) अकारांत तत्सम शब्द पुँलिंग होते हैं। जैसे - धन, जन, वन, जल

(ख) हिन्दी के आकारांत शब्द पुँलिंग होते हैं। जैसे - लड़का, पटाखा इत्यादि

नोट - उक्त नियम के कुछ अपवाद भी हैं।

स्त्रीलिंग शब्दों का लिंग-निर्णय -

आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत तत्सम शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - दया, माया, आज्ञा, घोषणा, सूचना, ईर्ष्या, इच्छा इत्यादि।

मूर्ति, नारी, गोष्ठी, मृत्यु, वस्तु, ऋतु, वायु आदि।

लिंग-निर्णय के सामान्य नियम

(क) जिन शब्दों के अंत में त्व, ना, आ, औटा, आव, आवा, औड़ा, पन इत्यादि प्रत्यय लगते हो, वे पुँलिंग होते हैं। जैसे - महत्व, पढ़ना, शौर्य, घेरा, सन्नाटा, बुढ़ापा, फैलाव, पहनावा, पकौड़ा, मित्र, बचपन, पागलपन इत्यादि।

(ख) जिन शब्दों के अंत में आई, आवट, आस, आहट, इया, ई, त, नी, री, ली इत्यादि प्रत्यय लगते हो, वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - मलाई, बनावट, मिठास, घबराहट, टिकिया, गरीबी, चाहत, चटनी, कोठरी, डफली इत्यादि।

(ग) संस्कृत (तत्सम) के अकारांत शब्द पुँलिंग तथा आकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - जल, स्वर्ग, भिक्षा, शिक्षा परीक्षा इत्यादि

(घ) तद्भव (हिंदी) के लिंग प्रायः तत्सम (संस्कृत) के लिंग के अनुसार होते हैं। जैसे - आश्चर्य अच्छा, संख्या - सौंघ, स्वर्ण - सोना इत्यादि

(ङ) हिन्दी की द्रव्यवाचक संज्ञाएँ पुँलिंग होती हैं। जैसे - लोहा, चूना, मोती, दही, घी, तेल, सोना इत्यादि।

अपवाद - चाँदी स्त्रीलिंग है।

Scanned with CamScanner

वचन

संख्या का बोध कराने वाले शब्द वचन कहलाते हैं। जैसे - लड़का, घोड़े आदि

वचन के भेद -

(i) एकवचन - संज्ञा के जिस रूप से उसके एक होने का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे - लड़का, घर, कलम इत्यादि।

(ii) बहुवचन - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे - घोड़े, नदियाँ इत्यादि

वचन परिवर्तन के नियम -

(i) आकारान्त शब्दों के अंत में 'ए' लगाकर बहुवचन शब्द बनाते हैं। जैसे लड़का - लड़के, घोड़ा - घोड़े इत्यादि।

(ii) व्यंजनांत मूल शब्दों के अंत में 'अ' का लोप कर उसके स्थान पर 'एँ' लगाकर बहुवचन बनता है। जैसे - नहर - नहरें, रात - रातें इत्यादि।

(iii) आकारान्त/उकारान्त/ओकारांत वाले शब्दों में अंतिम स्वर का लोप नहीं होता है, अंतिम स्वर के बाद एँ लगाते हैं। जैसे - महिला - महिलाएँ, वधू - वधुएँ इत्यादि।

(iv) ईकारान्त संज्ञा शब्दों में 'आँ' बहुवचन सूचक प्रत्यय लगाता है तो अंतिम स्वर 'ई' का ह्रस्व 'इ' हो जाता है। जैसे नारी - नारियाँ, टोपी - टोपियाँ इत्यादि।

(v) समुदाय सूचक शब्दों का प्रयोग बहुवचन में होता है। जैसे - मनुष्य, जनता, भीड़, मवेशी इत्यादि

(vi) कुछ शब्दों के एकवचन एवं बहुवचन एक समान होते हैं। जैसे क्रोध, भय, दान, स्वामी, तपस्वी इत्यादि

(vii) लोग, दर्शन, प्राण, बाल, हस्ताक्षर, आँसू, समाचार सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे

(viii) छाया, प्रेम, जल, दूध, वर्षा, हवा, आग सदा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं।

(ix) कुछ शब्दों के बहुवचन बनाने के लिए शब्दों के अंत में 'गण' या 'वृन्द' लगाते हैं। जैसे कर्मचारीगण, शिक्षकगण, छात्रवृन्द इत्यादि।

पद -

जब वाक्य में शब्द के साथ विभक्ति लगी रहती है, उसे पद कहते हैं। अर्थात् विभक्ति सहित शब्द पद कहलाते हैं। जैसे, राम पुस्तक को पढ़ता है।

पद-परिचय - पद परिचय का अर्थ होता है, पदों का अन्वय, अर्थात् विश्लेषण। वाक्य के प्रत्येक पद को अलग-अलग कर उसका स्वरूप और दूसरे पद से संबंध बताना 'पद-परिचय' कहलाता है। जैसे राम कहता है कि मैं मोहन की पुस्तक पढ़ सकता हूँ।

Scanned with CamScanner

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उनका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। जैसे - मैंने पत्र लिखा। राम ने मोहन को पीटा।

कारक के भेद —

(i) कर्त्ता कारक - संज्ञा के जिस रूप से क्रिया करनेवाले का बोध होता है, उसे कर्त्ता कारक कहते हैं। जैसे - तुमने आम खाया। इसका परसर्ग 'ने' होता है।

(ii) कर्म कारक - वाक्य में क्रिया का फल जिन शब्द पर पड़ता है, उसे कर्मकारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'को' है। जैसे - मोहन ने आम खाया।

(iii) करण कारक - जो क्रिया की सिद्धि में साधन के रूप में काम आये, उसे करण कारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'से, द्वारा' होता है। जैसे - राम ने रावण को बाण से मारा।

(iv) सम्प्रदान कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी को कुछ दिये जाने या किसी के लिए कुछ करने का बोध हो, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। जैसे - वह मेरे लिए पानी लाता है। इसका परसर्ग के, के लिए, वास्ते, के हेतु होता

(v) अपादान कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से विरह, बिछुड़ना, दूरी, तुलना आदि का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे - पेड़ से पत्ते गिरते हैं। इसका परसर्ग 'से' होता है।

(vi) संबंध कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी एक वस्तु का अन्य वस्तु के साथ संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसका परसर्ग अर्थात चिन्ह का, की, के होता है। जैसे - मोहन की गाय।

(vii) अधिकरण कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे - छत पर लड़का बैठा है। इसका परसर्ग में, पर होता है।

(viii) सम्बोधन कारक - जिस शब्द से किसी को पुकारने या बुलाने का भाव प्रकट होता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। इसका परसर्ग "हे, हो, अरे, ओ" होता है। जैसे - हे, राम यहाँ आओ।

निबंध —

(i) बिहार पहले और अब
(ii) छात्र और अनुशासन
(iii) समय की महत्ता
(iv) दहेज प्रथा
(v) बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
(vi) आतंकवाद
(vii) बेकारी की समस्या
(viii) वृक्षारोपण
(ix) प्रदूषण
(x) खेल का महत्व
(xi) साम्प्रदायिकता
(xii) बढ़ती हुई महँगाई
(xiii) नारी शिक्षा
(xiv) जनसंख्या विस्फोट
(xv) आदर्श छात्र
(xvi) युवा पीढ़ी एवं नशीला पदार्थ
(xvii) स्वच्छता

नोट — विद्यार्थीगण उपरोक्त निबंध की तैयारी अपने-अपने स्तर से करेंगे।

Scanned with CamScanner

शब्द -

अक्षरों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। जैसे - घर, हवा, अग्नि इत्यादि।

उत्पत्ति के आधार पर शब्द के चार भेद होते हैं -

(i) तत्सम - संस्कृत के मूल शब्द को तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे - अग्नि, अग्नि, पुष्प इत्यादि

(ii) तद्भव - संस्कृत शब्दों के बदले रूप को तद्भव शब्द कहते हैं। जैसे - आँसू, कपूर आदि

(iii) देशज - देशी भाषाओं के शब्द, देशज कहलाते हैं। जैसे - लोटा, डिबिया, आदि।

(iv) विदेशज - विदेशी भाषाओं के शब्द, विदेशज कहलाते हैं। जैसे - स्टेशन, इंजिनीयर इत्यादि।

रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद होते हैं -

(i) रूढ़ शब्द - अपने-आप में पूर्ण शब्द जिसमें खंड नहीं होता, रूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे - घर, नाक, हाथ आदि।

(ii) यौगिक - वैसे शब्द जिनका खंड करने पर सभी खंडों का अर्थ सार्थक होता है, उसे यौगिक शब्द कहते हैं। जैसे, हिमालय, विद्यार्थी इत्यादि।

(iii) योगरूढ़ - वैसे शब्द जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर एक विशेष अर्थ बतलाते हैं, उसे योगरूढ़ शब्द कहते हैं। जैसे - पंकज, नीलकंठ, लम्बोदर इत्यादि।

रूपांतर की दृष्टि से शब्द के दो भेद होते हैं - (i) विकारी शब्द - वैसे शब्द जिनका लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के अनुसार बदलते हैं, उसे विकारी शब्द कहते हैं। जैसे - गाय, वह, हम इत्यादि।

(ii) अविकारी - वैसे शब्द जिनका रूप लिंग, वचन, पुरुष, कारक के अनुसार नहीं बदलते हैं, उसे अविकारी शब्द कहते हैं। जैसे - धीरे-धीरे, तथा, अचानक इत्यादि।

Scanned with CamScanner

अव्यय

जिस शब्द में किसी भी कारण से कोई परिवर्तन नहीं होता है, उसे अव्यय कहते हैं। जैसे- अभी, जब, तब इत्यादि।

अव्यय के चार भेद होते हैं-

(i) क्रिया-विशेषण - क्रिया की विशेषता बताने वाले अव्यय क्रिया-विशेषण अव्यय कहलाते हैं। जैसे- धीरे-धीरे, जल्दी, जोर से इत्यादि।

(ii) संबंधबोधक - संज्ञा के बाद आकर उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्द से बतलाने वाले अव्यय संबंध बोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे- बाद, निकट, अपेक्षा, पीछे इत्यादि।

(iii) समुच्चयबोधक - एक वाक्य या शब्द का संबंध दूसरे वाक्य से बतलाने वाले अव्यय या जोड़ने वाले अव्यय समुच्चय बोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे- इसलिए, परन्तु आदि

(iv) विस्मयादि बोधक - जिन अव्ययों से हर्ष-शोक आश्चर्य आदि के भाव सूचित होते हैं, परन्तु उन का संबंध वाक्य के किसी विशेष पद से नहीं होता, उसे विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। जैसे- हाय, शाबाश, वाह इत्यादि।

उपसर्ग - वैसा शब्दांश जो किसी शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देता है उसे उपसर्ग कहते हैं। जैसे- प्र + कार = प्रकार, अनुमान आदि

प्रत्यय - वैसा शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ को बदल देते हैं, उसे प्रत्यय कहते हैं। जैसे- दिन + इक = दैनिक, मम + ता = ममता आदि।

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

(i) कृत प्रत्यय - धातु या क्रिया के अंत में लगने वाले प्रत्यय, कृत-प्रत्यय कहलाते हैं तथा इनसे बने शब्द कृदंत कहलाते हैं। जैसे, लिखआई = लिखाई।

(ii) तद्धित प्रत्यय - जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अंत में जुड़ते हैं, उसे तद्धित प्रत्यय कहते हैं, इस प्रकार बने शब्द तद्धितांत कहलाते हैं। जैसे- लकड़ी + हारा = लकड़हारा, अपना + पन = अपनापन आदि

काल

क्रिया के उस रूप को काल कहते हैं, जिससे उसके कार्य-व्यापार का समय और उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध होता है।

काल के भेद -

वर्तमान काल - जो समय अभी बीत रहा है उसे वर्तमान काल कहते हैं। जैसे- मैं पढ़ता हूँ।

वर्तमान काल के भेद -

(i) सामान्य वर्तमान काल - क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया का सामान्य रूप से सम्पन्न होने का बोध होता है, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं, जैसे- वह आती है।

(ii) तात्कालिक वर्तमान - जिससे ज्ञात हो कि क्रिया वर्तमानकाल में हो रही है, उसे तात्कालिक वर्तमानकाल कहते हैं। जैसे - वह जा रहा है।

(iii) पूर्ण वर्तमान - इससे वर्तमान में कार्य की पूर्ण सिद्धि का बोध होता है। जैसे - वह आया है।

(iv) संदिग्ध वर्तमान - जिससे क्रिया के होने में संदेह प्रकट हो, पर उसकी वर्तमानता में संदेह न हो, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं। जैसे वह पढ़ता होगा।

(v) संभाव्य वर्तमान - जिससे वर्तमानकाल में काम के पूरा होने की संभावना रहती है, उसे संभाव्य वर्तमानकाल कहते हैं। जैसे - शायद, बारिश हो।

भूतकाल - बीते हुए समय को भूतकाल कहते हैं। जैसे - वह गया।

भूतकाल के भेद -

(i) सामान्य भूत - जिससे भूतकाल की क्रिया के सामान्य समय का ज्ञान न हो, उसे सामान्य भूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे - मोहन आया।

(ii) आसन्न भूत - इससे क्रिया की समाप्ति निकट भूत में या तत्काल ही सूचित होती है, उसे आसन्न भूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे- मैंने खाया है।

(iii) पूर्ण भूत - क्रिया के उस रूप को पूर्ण भूत कहते हैं, जिससे क्रिया की समाप्ति के समय

Scanned with CamScanner

स्पष्ट होता है। उसे पूर्णभूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे - वह आया था।

(iv) अपूर्ण भूत - इससे ज्ञात होता है कि क्रिया भूत काल में हो रही थी, लेकिन उसकी समाप्ति का पता नहीं चलता है। जैसे - गीता सो रही थी।

(v) संदिग्ध भूत - इससे यह संदेह बना रहता है कि भूतकाल में कार्य पूरा हुआ था या नहीं। जैसे - तुमने खाया होगा।

(vi) हेतुहेतुमद् भूत - इससे यह पता चलता है कि क्रिया भूतकाल में होनेवाली थी, परन्तु किसी कारणवश नहीं हो सकी। जैसे - मैं आता तो वह जाता।

भविष्यत्काल - भविष्य में होनेवाली क्रिया को भविष्यत्काल कहते हैं। जैसे - वह आयेगा।

भविष्यत्काल के भेद -

(i) सामान्य भविष्य - इससे प्रकट होता है कि क्रिया सामान्यतः भविष्य में होगी। जैसे - मैं पढ़ूँगा।

(ii) संभाव्य भविष्य - जिससे भविष्य में किसी कार्य के होने की संभावना हो, उसे संभाव्य भविष्यकाल कहते हैं। जैसे - रमेश कल आया।

(iii) हेतुहेतुमद् भविष्य - इसमें एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करता है। जैसे वर्षा होगी तो फसल अच्छे होंगे।

Scanned with CamScanner